अध्ययन सामग्री
एम॰ ए॰ सेमेस्टर 2
CC 9 UNIT 1
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
वी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰, आरा

24.07.20

उत्तररामचरितम्

भवभूति का काल

यह हर्ष का विषय है कि जहाँ भास के समय निर्धारण में विद्वान् लोग एक सहस्र वर्ष का अन्तर रखते हैं और कालिदास के विषय में 5 शताब्दी आगे-पीछे तक रखते हैं वहाँ भवभूति का समय सीमित समय में निश्चित किया जा सकता है। कश्मीर के पण्डित कल्हण ने 1158-59 के लगभग 'राजतरङ्गिनी' की रचना की। इसमें कान्यकुब्ज के राजा यशोवर्मा का निर्देश है। कल्हण के अनुसार गौडवहो के कर्ता वाक्पतिराज तथा भवभूति इन्हीं यशोवर्मा के आश्रित थे —

कविर्वाक्पतिराजश्रीभवभूत्यादिसेवितः।
जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुतिवन्दिताम् ॥

वाक्पतिराज का स्थान प्राकृत-साहित्य के कवियों में नितान्त उदात्त है। उनका गउडवहो (गौडवधः) प्राकृत का एक उत्कृष्ट काव्यग्रंथ है। इन्होंने भवभूति की प्रशंसा निम्नलिखित पद्य में की है—

भवभूइजलहिनिग्गय – कव्वामयरसकणा इव फुरन्ति।
जस्स विसेसा अज्जवि वियडेसु कहाणिवेसेसु ॥

संस्कृत में इसका रूप इस प्रकार होगा —

भवभूतिजलधिनिर्गतकाव्यामृतरसकणा इव स्फुरन्ति ।
यस्य विशेषा अद्यापि विकटेषु कथानिवेशेषु ॥

इस पद्य में अज्जवि (अद्यापि) पद यह संकेत करता है कि भवभूति वाक्पतिराज से कुछ प्राचीनतर ही है ।

कल्हण ने राजतरंगिणी में लिखा है कि भवभूति तथा वाक्पतिराज के आश्रयदाता यशोवर्मा को काश्मीर-नरेश ललितादित्य ने पराजित किया और अपनी विजयपताका गौडदेश (बंगाल) तक फैलायी । कनिंघम के अनुसार ललितादित्य के राज्य का समय 695-732 बताते हैं । पर अन्य विद्वान् जो चीनदेशीय प्रमाणों का आश्रय लेते हैं ललितादित्य का समय 33 वर्ष पीछे बताते हैं । उनके अनुसार ललितादित्य ने 724-760 में शासन किया । गउडवहो एक सूर्यग्रहण का निर्देश करता है । डॉ॰ जैकोबी ने ज्योतिषीय गणना के आधार पर यह सिद्ध किया है कि ऐसा सूर्यग्रहण कन्नौज में 14 अगस्त 733 ई॰ को हुआ था । डॉ॰ भण्डारकर ने जैन प्रमाणों के आधार पर यह माना है कि यशोवर्मा 753 ई॰ में मरा । चूँकि गउडवहो में इस सूर्यग्रहण का निर्देश है अतः इसका समय 733 ई॰ के कुछ बाद का होगा । वाक्पतिराज के वर्णन से यह स्पष्ट है कि उनके गौडवधः की रचना के समय भवभूति पर्याप्त ख्यात हो चुके थे और संभवतः कीर्तिशेष भी हो चुके थे । इसका अनुमान गौडवधः के 'अद्यापि' पद से होता है ।

भवभूति के समय का निश्चय कल्हण की राजतरङ्गिणी के अतिरिक्त अन्य साक्ष्यों से भी होता है । वे कालिदास से निश्चितरूपेण परवर्ती हैं जिनके ग्रन्थों से वे परिचित हैं । वे बाण से भी परवर्ती हैं क्योंकि बाण उनसे अपरिचित हैं । वाक्पतिराज के अतिरिक्त भवभूति का सर्वप्रथम निर्देश करनेवाले राजशेखर (880 - 920 ई॰) हैं, जिन्होंने निम्न पद्य में भवभूति का निर्देश किया है —

बभूव वल्मीकभवः पुरा कवि-
स्ततः प्रपेदे भुवि भर्तृमेण्ठताम् ।
स्थितः पुनर्यो भवभूतिरेखया
स वर्तते सम्प्रति राजशेखरः ॥

वामन ने अपने काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति में भवभूति के पद्यों को उद्धृत किया है। महावीरचरित के 'दोलांलाञ्छितचन्द्रशेखर-धनुर्दण्डावभङ्गोद्यत' को काव्यालङ्कार में वामन ने गौडी रीति के उदाहरण के रूप में उपन्यस्त किया है। इसी प्रकार उन्होंने उत्तररामचरित के 'इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयोः' को रूपक के उदाहरण के रूप में उद्धृत किया है। कल्हण के अनुसार जयापीड के सभापण्डित थे —

मनोरथः शङ्खदत्तश्चटकः सन्धिमांस्तथा ।
बभूवुः कवयस्तस्य वामनाद्याश्च मंत्रिणः ॥

जयापीड का समय 779-813 ई० है। अतः वामन का समय भी आठवीं सदी का उत्तरार्ध और नवीं का प्रथम चतुर्थांश माना जा सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भवभूति बाण से पश्चाद्वर्ती तथा वामन और सम्भवतः वाक्पतिराज से भी पूर्ववर्ती हैं। बाण का समय 7वीं सदी का प्रथमार्ध है। अतः भवभूति इसके बाद हुए होंगे। वामन का समय नवीं सदी का अंतिम चरण है अतः भवभूति इससे पूर्व हो चुके होंगे। वाक्पतिराज 733 के लगभग जीवित थे अतः भवभूति का समय भी उस समय या उससे कुछ पहले स्थिर किया जा सकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भवभूति 7वीं सदी का अन्तिम चरण तथा आठवीं सदी के प्रथम चरण (या आठवीं सदी के मध्यभाग) के बीच था।